बी.ए.(ऑनर्स) तृतीय सेमेस्टर, परीक्षा-दिसम्बर,2016
संस्कृत भाषा

समयः 3 घण्टे पूर्णांक-70 न्यूनांक-25

1. (अ) किन्हीं दो गद्यांशों का ससन्दर्भ अनुवाद कीजियेः- 16

(i) यस्य च मदकल-करि-कुम्भ-पीठपाटनमाचरता, लग्न-स्थूलमुक्ताफलेत, दृढ़-मुष्टि-निष्पीडन-निष्ठ्यूतधाराजलबिन्दु-दन्तुरेण कृपाणेजा कृष्यमाणा सुभटोरः कपाटविघटित कवच-सहस्रान्धकार-मध्यवर्त्तिनी करि-करट-गलित-मदजलासार-दुर्दिजास्वभिसारिकेव समरनिशासु समीप-मसकृदाजगाम राजलक्ष्मीः ।

(ii) आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्त कुवलयदल कोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभागां वेणुलतामादाय नरपति-प्रतिबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिममाजघान; येन सकलमेव तद् राजकम् एकपदे कनकरियूथमिव तालशब्देन तेन वेणु-लताध्वनिजा युगपदावलितवदनभवनिपाल मुखादाकृष्य चक्षु स्तदभिमुखमासीत् ।

(iii) यत्र च पीतोद्कीर्ण जलनिधि-जलमिव मुनिना निखिलमाक्षगोपान्तवर्तिषु विभक्तं महाहृदेषु । यत्र च दशरथ-सुत-निशित-नर-निकर-निपात-निहत-रजनीचर बल-बहल-रुधिर-सिक्त-मूलमद्यापि तद्रागाविद्ध-निर्गत पलाशमिवाभाति नव-किसलयभरण्यम् ।

(ब) अधोलिखित श्लोकों का अर्थ हिन्दी में लिखिये :- 08

हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव, क्षपाकरः क्षीरमहार्णवादिव ।
अभूत् सुपर्णो विनतोदरादिव द्विजन्मनामर्थपतिः पतिस्ततः ।।

अथवा

अकारणाविष्कृतवैरदारुणाद् असज्जनात् कस्य भयं न जायते ।
विष महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुः सहं सन्निहितं सदा मुखे ।।

2. चुरादिगण एवं रुधादिगण की धातुओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये । 10

3. किन्हीं दस अव्ययों का अर्थ लिखकर संस्कृत वाक्य रचना कीजियेः- 10

अ- इव ब- यत्र स- कदा द- अधुना इ- पुरा
फ- पश्चात् क- वृथा ख- अलम् ग- समया घ- स्वाहा
च- अत्र छ- नमः ज- श्वः ।

4. किन्हीं पाँच वाक्यों का कृदन्त प्रत्यय प्रयोग पूर्वक संस्कृत में अनुवाद कीजियेः- 10

(i) उसे अवश्य जाना चाहिए ।
(ii) लड़के खेलकर घर लौटते हैं ।
(iii) दीनों को धन देना चाहिए ।
(iv) कल मेरे घर भोजन करना ।
(v) तुम कहाँ थे ?
(vi) लक्ष्मण ने इन्द्रजीत को मारा था ।
(vii) प्रत्येक विद्यार्थी गुरुजनों का सम्मान करे ।
(viii) वह कुछ खाना चाहता है ।

5. किन्हीं तीन पदों की हिन्दी में व्याख्या कीजियेः- 6

(i) यजमान
(ii) शयनम्
(iii) लभ्य
(iv) भोज्य
(v) दाता

6. निम्नलिखित लकारों में धातुओं के रूप लिखिये (कोई दो) 10

(i) भू (भव्) - लट्लकार
(ii) गम् (गच्छ) - लोट्लकार
(iii) दृश्य (पश्य) - लङ्लकार
(iv) श्रु - लृट्लकार

xx